कामकाजी स्त्री- आर्थिक स्वतंत्रता बनाम दोहरा दमन-चक्र, भयावह एकाकीपनः स्वातंत्र्योत्तर कहानियों के प्ररिप्रेक्ष्य में

डॉ. श्रीमती नीलिमा वर्मा

स्वतंत्रता–प्राप्ति के अनन्तर परिलक्षित सामाजिक स्तर पर एक प्रमुख क्रांतिकारी परिवर्तन के तहत नारी परिवार की अर्थ–व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण तथा अपनी अस्मिता, योग्यता एवं कार्यक्षमता को प्रमाणित करने हेतु अर्जन–क्षेत्र में कदम रखने लगी है। वस्तुतः, आत्म–निर्भर, आत्म–सम्मान से भरी हुई, दबंग अर्जिका नारी ने कई मूल्यों को एक तरफ कर दिया है। एक ओर तो वह आर्थिक पराधीनता से मुक्त हुई है और उसकी यह मुक्ति 'पिता रक्षिते कौमारे, भ्रत रक्षिते यौवने' की पुरानी मानसिकता पर जबर्दस्त प्रहार है, दूसरी ओर पति परमेश्वरत्व को भी उसने चुनौती दी है। आज की नारी का सर्वाधिक प्रखर रूप–अर्जिका रूप यद्यपि उसके सभी स्वप्नों–मनोरथों को पूर्ण करता हुआ प्रतीत नहीं होता तथापि, नारी को यह रुप इसलिए प्रिय है कि वह इस रुप में समाज की रुढ़ियों और पुरुष वर्ग की परम्परागत श्रेष्ठता के लिए एक चुनौती बन सकती है। जब नारी का अर्जन–व्यापार इस समाजशास्त्रीय सूत्र सें जुड़ जाता है तो नारी की अर्जन–क्षमता मूल्यवान हो उठती है।

अर्जिका नारी को कितने ही स्तरों पर अपने दायित्वों का निर्वहण करना पड़ता है। पारिवारिक एवं अपने बाह्रय कार्यक्षेत्र के दायित्वों के संपादन के क्रम में उसे एक सांस्कृतिक संकट का भी सामना करना पड़ता हैं। एक ओर घर परिवार के असीमित दायित्व हैं तो दूसरी ओर दफ्तर का वांछनीय/अवांछनीय परिवेश......एक ओर बच्चे मानस–पटल से ओझल नहीं हो पाते तो दूसरी ओर कार्यालय की ड्यूटी उसके जीवन को दोहरा दायित्व निभाने को बाध्य करती है। चौका–बर्तन, बच्चों की शिक्षण–व्यवस्था, पति एवं परिवार के अन्य सदस्यों की सुविधाओं की चिंता–वस्तुतः कामकाजी महिलाओं की जिम्मेदारी किन्हीं दायरों में सीमित नहीं हो पाती। इतना ही नहीं, परिवार व आस–पडोस के लिए, सामाजिता के निर्वाहार्थ यथेष्ट समय निकाल पाना उसके लिए दुष्कर हो जाता है। कामकाजी नारी के दबंग, आत्म–निर्भर एवं आत्म–सम्मान से भरपूर चरित्र का स जन राजी सेठ की कहानी 'मेरे लिए नहीं' की कामकाजी पात्रा में हुआ है। अस्वस्थ हो जाने पर किसी पारिवारिक सदस्य को बुला लेने की सलाह पर वह कहती है "क्यों बुला लूँ, आय हैव टोल्ड दैम, आयम ऑन माय ओन। सुख में, दुख में, बीमारी में, आराम में, मैं अपनी देखभाल खुद कर सकती हूँ। पूरा शहर संभालती हूँ , अपने को नहीं संभाल सकती......घर मैं कभी ऐसे नहीं जाती 'हेल्पलेस होकर', आय कैन लुक ऑफ्टर माय सेल्फ और फिर यह सब तो रेसीप्रोकल होता है। मैं जब उनकी बात नहीं मानती तो वह भी क्यों मानने लगे"[1] इस प्रकार के दो टूक संबंध अपने रक्त संबंधियो से रखना, किसी की सहानुभूति न चाहना, विवाह विषयक नकारात्मक सोच एवं तद्वि ायक मान्यताओं के रुढ़िवादी दृष्टिकोण से मुक्त [2] इस चरित्र में व्यक्ति–चिंतन की प्रधानता है। मन्नू भंडारी की "यही सच है" [3] कहानी में भी आत्म–निर्भर, निर्भीक, स्वतंत्र होकर कर्म–क्षेत्र में कदम रखने वाली आधुनिक नारी की व्यक्ति–प्रधान छवि प्रस्तुत की गई है। गिरिराज किशोर की "फ्राक वाला घोड़ा, निकर वाला साईस" कहानी की पत्नी अन्य पुरुष की ओर महज इसलिए आकृष्ट होती है कि वह अपने पति से अधिक अर्जन करती है तथा उसका पद भी ऊँचा है। पत्नी की आर्थिक क्षमता ने इस विश्वास को बल दिया है कि वह पति के समक्ष क्यों झुके ? और वह संबंध–विच्छेद का कदम निश्चिंत होकर उठा सकती है। कहानी 'यातना शिविर' की पात्रा रमा श्रीवास्तव अपने संघर्ष को दो स्तरों पर स्वर देती हैं। एक वह जो उसकी भीतरी दुनिया है और दूसरा वह जहाँ वह एक सख्त प्रिंसिपल के रुप में भ्रष्ट–व्यवस्था के बीच संघर्षत है। इन दोनों मोर्चों पर लड़ती हुई वह कहीं भी समझौता परस्त नहीं होती । पुष्प की ही 'अग्निकुंड' कहानी की इवलिन डेविस भी ऐसी ही चरित्र है। इन दोनो स्त्री पात्रों का स जन लेखक की रचना–दृष्टि के विकास का वह फलक है, जहाँ परिवर्तित परिस्थितियों मे नारी को कमजोर मानकर चलने को चुनौती दी गई है। 'अग्निकुंड' एवं 'यातना शिविर' कहानी में नारी पात्रों का संसार न तो दाम्पत्य संबंधों की 'टूटन' है, न 'प्रेम वेदना' का क्रन्दन है अपितु, सामाजिक सरोकारों में अपने आपको रेखाकिंत किये जाने की लड़ाई है।

कामकाजी नारी के स्वावलम्बी होने के कारण अब वे पति के प्रति उन आदर्शों एवं भावनाओं से बंधी नहीं रह सकती, जिनके प्रति स्वाधीनता पूर्व की महिलाएँ प्रतिबद्ध थीं। फलतः, उनके जीवन में दरार उत्पन्न हो जाती है। मोहन राकेश की कहानी 'एक और जिंदगी' की कामकाजी चरित्र बीना में जीवन की गहरी समझ है। वह पुरुष मनोवृत्ति से पूर्णतः अवगत है– 'इसे आपको सौंप दूँ ? बीना के स्वर में वितृष्णा गहरी हो गयी, किस चीज के भरोसे ? कल को आपकी जिन्दगी क्या होगी, यह कौन कह सकता है ? बच्चे को उस अनिश्चित जिंदगी के भरोसे छोड़ दूँ, इतनी मूर्ख मै नहीं हूँ।' अपने अधिकारों के प्रति विशेष सजगता भी बीना के चरित्र में उजागर होती है। 'आप अदालत में जाना चाहे तो मुझे कोई एतराज नहीं है, जरुरत पडने पर मैं सुप्रीम कोर्ट तक आपसे लडूगी। आपका बच्चे पर कोई हक नहीं है।'[4]

'एक और जिंदगी' की बीना अपने जीवन की इस टूटन को स्वीकार करती है। पर व्यक्ति–स्वातंत्र्य की चाह उसे झुकने नहीं देती। राजेन्द्र यादव की कहानी 'टूटना' की लीना भी समझौता नही कर पाती है क्योंकि उसका समझौता एक पक्षीय होने के कारण टूट जाता है। रमेश बक्षी की 'जिनके मकान ढ़हते हैं' एवं निर्मल वर्मा की 'धागे' कहानी की नारियाँ अपने भीतर निरन्तर

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग शासकीय महाविद्यालय, तराना जिला-उज्जैन

एक घुटन की अनुभूति करती रहती हैं, घर पति एवं बच्चों से होता है, आपसी सम्बन्धों से होता है। पर वे कहाँ हैं ? शेखर जोशी के 'कोसी का घटवार' में भी अर्जिका पत्नी की मनःस्थिति का चित्रण हुआ है। 5 मन्नू भंडारी की कहानी 'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबी के पास इतना समय नहीं होता कि वह रानी माँ के चबूतरे पर बैठकर एक–दूसरे पर कीचड़ उछाले। यही कारण है कि गाँव की महिलाएँ उससे रुष्ट रहती हैं, उसे ताने देती है। गुलाबी बच्चों की इच्छापूर्ति के लिए, उनके सुखद भवि य के लिए जब अतिरिक्त कार्य करती है तो गलत समझी जाती है–

"मुझे तो लगता है, चौका–बर्तन की आड़ में कोई और ही लीला चल रही है।कृकृ क्यों जाती है चौका–बर्तन करने ? मजदूरी में क्या गुजर नहीं होती ? मुझे तो इसके लच्छन अच्छे नहीं नजर आते, जरा नजर रखा कर न उधर। आखिर वह चुड़ैल बच्चों को बंद करके जाती कहाँ है।"6 कामकाजी नारी जब कार्य–क्षेत्र पर जाती है तो कई बार उसे अपने अबोध बच्चों से अलग होना पडता है। यह स्थिति एक ओर माँ को कुंठित करती है, दूसरी ओर माँ का प्रेम न मिल पाने के कारण बच्चों का विकास अवरुद्ध या अवांछित दिशा में होने लगता है। कभी–कभी मातृत्व के निषेध वाली इस स्थिति से मुक्ति पाने के लिए वह त्यागपत्र देने की बात सोचती है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'दरमियान' 7 कामकाजी नारी को नौकरी के कारण छोटे बच्चे को 'शिशु विकास केन्द्र' में छोड़ने एवं तद्विषयक समस्या को झेलना पड़ता है। बच्ची मिनी भी आरम्भ में मम्मी के लिए बहुत व्यथित होती है। मम्मी के विलम्ब से आने पर वह परेशान हो जाती है। लेकिन, कालान्तर में वह अपनी स्थिति से समझौता कर लेती है। यद्यपि इससे मम्मी को थोड़ी राहत मिलती है, तथापि, उसे यह बात भी कचोटती है कि मिनी के लिए उसका महत्व कम हो गया है।

नर्स, अध्यापिका, निजी सचिव तथा घरेलू नौकरानियाँ सर्वाधिक असुरक्षित हैं। ऐसी ही उलझनपूर्ण स्थितियों के कारण कमलेश्वर की कहानी 'आसक्ति' की सुजाता की विषम स्थिति हो जाती है–"और एक दिन तो वह पड़े–पड़े ही रो पडी थी। उसकी आँखों से दो बूँदें अनजाने में ही ओस की तरह दरक पड़ी थी और उसने बडे दुःख से कहा था," पता नहीं लोग क्या समझते हैं, दफ्तर का चावला है न, कहने लगा–इतना कतराकर रहने से काम नहीं चलेगा। मुझे तो लगता है कि वह मुझे भी बदनाम कर देगा और एक दिन मुझे यह नौकरी छोडनी होगी"। 8 ममता कालिया की 'जाँच अभी जारी है',9 कहानी की अपर्णा कामकाजी महिलाओं को समाज से मिला असहयोग, नौकरीशाही के भ्रष्टाचार एवं तद्जन्य सामाजिक विसंगति की शिकार चरित्र का प्रतिनिधत्व करती है। आरम्भ में आशा एवं विश्वास से भरी अपर्णा शनैः–शनैः विषम परिस्थितियों के कारण संत्रस्त होकर मानसिक तनाव एवं घुटन को झेलने को विवश होती है। ओव्हर टाइम के नाम पर जो अनैतिक वातावरण आज के कार्यालयों में व्याप्त दिखता है, उसका प्रतिकार भी अपर्णा करती है। किंतु, उसके गलत परिणामों को भी झेलने को विवश होती है। किसी प्रकार के गलत इरादे न रखने पर भी अनजाने में हुई भूल के कारण उसके वे तथाकथित अफसर उसे संत्रस्त करने का अवसर अनायास पाकर उसके जीवन की सुख–शांति छीनने को तत्पर हो जाते हैं। कई जाँच समितियाँ बनाई जाती हैं। उसकी फाइल मोटी होती जाती है। अपर्णा फाइल ढोते–ढोते बेजान हो चली थी। अपनी स्थिति से त्रस्त हो जाने पर भी नौकरी से त्याग–पत्र देने का अर्थ होता सारे आरोप को स्वीकार कर लेना। मामला धीरे–धीरे दीर्घाकार लेता जाता है। जाँच की खबर पूरे शहर में फैल जाती है। आरम्भ में तो लोगों ने सहानुभूति भी व्यक्त की, किन्तु , कालान्तर में लोग इस प्रकरण से उबने लगते हैं और अपर्णा हर स्तर पर अकेली होती जाती है। इस प्रकार, यहाँ नौकरशाही के भ्रष्टाचारों एवं सामाजिक विसंगति की शिकार कामकाजी नारी की व्यथा का चित्र रुपायित हुआ है। उषा प्रियम्वदा की कहानियाँ में एक ओर एकाकीपन से टकराने वाली अर्जिका नारी की मानसिकता को उभारा गया है दूसरी ओर नारी का अर्जिका रुप वैवाहिक संबंधो को प्रभावित करता है। आज विवाह के लिए नारी की योग्यताओं में उसकी अर्जन–क्षमता भी सम्मिलित हो रही है। साथ ही , अपनी अर्जन–क्षमता से प्राप्त आर्थिक निश्चिंतता ने पति के चुनाव को भी प्रभावित किया है। चित्रा मुद्गल की 'लाक्षाग ह' 10 कहानी की सुन्नी अपनी अर्जन–क्षमता के आधार पर एक व्यापारी के विवाह–प्रस्ताव को ठुकरा देती है।

मन्नू भंडारी की 'क्षय' तथा सुधा अरोड़ा की 'घर' कहानियों में नौकरी पेशा नारी का चरित्र अंकित है। क्षयग्रस्त पिता के आर्थिक दायित्वों का निर्वहण करती हुई क्षय कहानी की कुंती अपनी समस्त आकांक्षाओं को क्षयग्रस्त हो जाने देती है। 11

मोहन राकेश की कहानी 'आज के साये', 'जानवर और जानवर' में आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण इन नारी पात्रों को अविवाहित रहना पड़ता है। इनमे आत्म–विश्वास और आत्म–निर्णय की अनिश्चितता का भी यही कारण है। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् नौकरी इसलिए अनिवार्य हो जाती है कि विवाह होने तक का समय कट जाए, प्रतिभा का सदुपयोग हो सके साथ ही, आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो सके। विवाह की मंजिल तय करती इन नौकरीपेशा कुमारियों को संकटपूर्ण विकट स्थितियों से समझौता करते हुए जिन दुहरी जिम्मेदारियों से गुजरना पड़ता है, वे आज की कहानियों मे बड़ी ही सहजता के साथ रेखांकित है। यथा , निर्मल वर्मा की 'परिन्दे', मोहन राकेश की 'मिस पाल', महीप सिंह की 'सीधी रेखाओं का वृत्त' तथा 'गंध' कमलेश्वर की 'आसक्ति'। आज जीवन में पग–पग पर आर्थिक दबाब को झेलती अविवाहित नारी के लिए नौकरी एक ऐसी अनिवार्यता बन जाती है जिसे वह विवाहित होने के बाद भी नहीं छोड़ पाती और घर तथा नौकरी की सारी जिम्मेदारियों से अकेले जूझने के लिए वह अपने आपको तैयार कर लेती हैं। इस प्रकार के निर्णय की पृष्ठभूमि में कभी स्वावलंबन की बात होती है तो कभी जीवन–स्तर में सुधार की आकांक्षा जिससे नारी में आत्मविश्वास एवं आत्मसंतोष की भावना जगती है। वह पुरुष सत्तात्मक समाज मे अपने खोये सम्मान को फिर से पा लेती हैं। ये सभी उपलब्धि याँ उसे सहज ही नहीं मिल पाती, इसके लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। घर में फल दिखाई देते हैं या कुकिंग गैस है तो पत्नी की कमाई की बदौलत। 12 इतना ही नहीं, घर की आर्थिक दशा सुधारने में भी वह पति की मदद करती

है। 13 इसके लिये पति से दूर नौकरी करते हुए उसे दाम्पत्य जीवन के सुखों के साथ–ही–साथ मात त्व से भी वंचित होने की नियति भोगनी पड़ती है। 14 अपमानजन्य परिस्थितियों को झेलती हुई नौकरीपेशा नारी हिमांशु जोशी की कहानी 'किसी एक शहर' तथा 'भेड़िए' में चित्रित है। बच्चे की चिंता में काम पर जाने से इन्कार करने पर पति से मिटने वाली मजदूर औरत हिमांशु जोशी की 'रास्ता रुक गया है' कहानी में चित्रित है।

दूधनाथ सिंह की 'प्रतिशोध' कहानी मध्यमवर्गीय जीवन की दर्दनाक कहानी है। इस कहानी में नौकरी पेशा पत्नी के द्वारा परिवार की परवरिश होती है फिर भी, परिवार के लोग उसके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। 15 इन्हीं की 'सब ठीक हो जाएगा' कहानी में पति कुछ नहीं कमाता और प्रतीकात्मक रुप से वह उपेक्षित और बीमार है। अर्जिका पत्नी कई लोगों से मिलती–जुलती है, कुछ के प्रति वह आसक्त भी है। प्रतिक्रिया स्वरुप पति भीतर–ही–भीतर असंतुष्ट है किंतु, बाहर से शांत। इस प्रकार की कहानियाँ यह अभिव्यंजित करती हैं कि पत्नी के आर्थिक व्यक्तित्व के विकास के साथ उसकी यौन स्वच्छंदता बढ़ रही है और यदि पति बेकार है तो यह स्वच्छंदता उच्छृंखलता की हद तक पहुँच जाती है। दाम्पत्य–सम्बन्ध बिल्कुल टूटता हुआ प्रतीत होता है। पत्नी का व्यक्तित्व नई आभा से दीप्त है। पति के संस्कारी और सामाजिक व्यक्तित्व का भंजन हो रहा है । पति की उपेक्षा ही नहीं, किसी अन्य पुरुष के प्रति आसक्ति भी दिखलाई देती है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी में चित्रित कामकाजी नारी के विविध पक्षों के विवेचनोपरांत यह स्पष्ट है कि अर्थोपार्जन के कारण कामकाजी नारी की स्थिति अधिक सुदृढ़ हुई है तथा परिवार में भी उसका विशेष महत्व दृष्टिगोचर होता है। फिर भी , कामकाजी नारी का चरित्र समाज की रुढ़ियों एवं पुरुष की परम्परागत श्रेष्ठता के लिए एक चुनौति बनकर इन कहानियों मे उपस्थित हुआ है। कई नारी–चरित्र समाज की असहयोगात्मक नकारात्मक एवं नौकरशाही के भ्रष्टाचारों एवं सामाजिक विसंगतियों की शिकार चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है। दफ्तर में रहते हुए भी संतान के प्रति, पारिवारिक दायित्वों के प्रति उसकी आकुलता कहानियों मे व्यक्त हुई है। कामकाजी नारी के संबंधो के आत्मीय सूत्र भी कई बार टूटे हुए मिलते हैं। फलतः, एकाकीपन की नियति को झेलने को अभिशप्त नारी के चित्र भी उद्‌घाटित हुए है। सहकर्मियों की कुटिल दृष्टि का शिकार होने के कारण उनके प्रति विकर्षण एवं तिरस्कार जन्य भाव उत्पन्न होते हैं तो वहीं स्वावलंबन के कारण पति के प्रति अनास्था के भाव भी झेलते हैं। अधिकारों के प्रति उनमें विशेष सजगता, आत्मविश्वास, अहम् भावना एवं परिस्थितियों से समझौता न करने की प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है। कामकाजी नारी के चरित्र में एक ओर तो उसके दायित्व की विशदता है तो दूसरी ओर आत्मविश्वास और आर्थिक स्वतंत्रता का बोध तथा स्वाभिमान के प्रति जागरुकता भी परिलक्षित होती है किंतु, यह नवोदित आर्थिक व्यक्तित्व उसके दाम्पत्य–संबंध के लिए एक खतरा बन गया है। संबंधों की टूटन एवं अति औपचारिकता की परिणति स्वरुप नारी का यह रुप प्रस्तुत हुआ है। कई ऐसे चरित्र भी चित्रित हुए हैं जो परिवार को आर्थिक–संबल प्रदान करने पर भी परिवार के दुर्व्यवहार झेलने को विवश हैं। कई बार तो उसे दाम्पत्य जीवन के सुख से ही नहीं , मात त्व से भी वंचित होना पड़ता है। कई कामकाजी नारी चरित्र पति की उपेक्षा ही नहीं, अन्य पुरुषों के प्रति आसक्त भी दीखते हैं। भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति मोर्चा लेने वाले तथा सामाजिक सारोकारों में अपने आपको रेखांकित किये जाने की लड़ाई भी उनमें देखी जा सकती है।

अस्तु, आर्थिक क्षेत्रो में कदम रखने पर भी, अपनी कार्यक्षमता को प्रमाणित करने पर भी आज नारी को अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का अपेक्षित प्रतिदान नहीं मिलता। यह एक कटु सच्चाई है कि दोहरे कार्यक्षेत्रों को सफलतापूर्वक निभाने पर भी अनगिनत संघर्षों को झेलने पर भी उसके निजी सपनों के लिये, उसकी आकांक्षाओं एवं रुचि–अरुचि के लिये कोई 'स्पेस' नहीं है। आर्थिक स्वतंत्रता का सुनहरा परिदृश्य भले ही अपनी आभा बिखेरता हुआ दृश्यमान हो किंतु, उसके मनोजगत पर हृदयगत स्तर पर वह बहुत एकाकी है, अपनों के बीच भी अजनबीपन एवं स्वार्थांध की शिकार है। उसके अंतर्जगत में भयावह अंधेरा है, चाहे अनचाहे संबंधों की निर्जीवता ढोने की विवशता है। जाने–अनजाने दोहरे दमन–चक्र की शिकार ये नारियाँ हर जगह पुरुष वर्चस्व से उपजी सामंती प्रवृत्तियों की शिकार हैं। उच्च शिक्षा एवं स्वावलम्बन के बावजूद परम्परा, मर्यादा, उत्तरदायित्व, यौन–शुचिता–इन सभी स्तरों पर उसे पराधीनता का अहसास कराया जाता है।

---

lanHkZ lwph %&

1. मेरे लिए नहीं– तीसरी हथेली–राजी सेठ –पृ.सं. 130
2. (अ) आयम मेड डिफरेण्टली....मैं अपने को अच्छी तरह जानती हूँ, मुझसे यह सब नहीं निभ सकता। खाने का सवाल सबसे बाद में, रखने की छुट्टी सबसे पीछे , पत्नी जिसे पत्नी कहते हो तुम सब लोग वह मैं कभी नहीं हो सकती। मेरे अन्दर दूसरों को उस हद तक एडजस्ट करने का माद्दा नहीं है। आय टेल यू दे आर ग्रेट दीज वाइव्स डू यू नो हाउ टु किल देम सेलव्स फॉर अदर्स रियल मास्टर्स.... वही पृ.134

(ब) मेरे लिए जिंदगी बहुत कीमती चीज है, वेरी प्रेशियस बस! बस! बस! ......मोस्ट क्रुअल एक्सपेक्टेशन.......यही तो सबसे ज्यादा मारने वाली बात है। किसी से चाहा जाना कि वह खुद ही सोचकर सामने वाले की इच्छा को ध्यान में रखकर अपने आपको बदल ले इससे बड़ी कोई डिमांड नहीं हो सकती कृ..... .वही पृ.135

3. यही सच है– प्रतिनिधि कहानियाँ – मन्नू भंडारी– पृ.11
4. एक और जिंदगी– प्रतिनिधि कहानियाँ – मोहन राकेश – पृ. 91
5. कोसी का घटवार –प्रतिनिधि कहानियाँ–शेखर जोशी – पृ. 43
6. रानी माँ का चबूतरा– प्रतिनिधि कहानियाँ–मन्नू भंडारी – पृ.32
7. दरमियान – अपनी वापसी – चित्रा मुद्‌गल – पृ. 71
8. आसक्ति – मेरी प्रिय कहानियाँ – कमलेश्वर– पृ. 13
9. जाँच अभी जारी है –ममता कालिया–पृ. 158
10. लाक्षागृह–चित्रा मुद्‌गल, धर्मयुग, 20 अगस्त 1978.
11. क्षय–प्रतिनिधि कहानियाँ–मन्नू भंडारी–पृ. 61
12.मैं–प्रतिनिधि कहानियाँ–रवीन्द्र कालिया– पृ. 18
13. बेशर्मी–वही–रवीन्द्र कालिया–पृ. 22